100 Years of Rashtriya Swayamsevak Sangh

The Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) was founded in Nagpur, Maharashtra, on 27 September 1925 by Dr Keshav Baliram Hedgewar. This was a period of intense socio-political ferment in colonial India, marked by the freedom struggle and social reform movements. Conceived as a volunteer-based organisation emphasising discipline, social responsibility, and cultural awareness, the RSS sought to foster civic engagement and national consciousness during the era of pre-independence awakening. RSS volunteers and their ideology inspired nationalist sentiments, promoted self-reliance, and encouraged civic engagement during that period.

The organisational framework of the RSS is centred on *Shakhas*, local assembly units where volunteers, or Swayamsevaks, participate in physical training, community interactions, prayers, and moral education. This decentralised structure facilitated rapid expansion from Nagpur across Maharashtra and later to other regions of India. Following Hedgewar's death in 1940, leadership under Madhav Sadashiv Golwalkar strengthened its cadre-based model, while Balasaheb Deoras oversaw wider national expansion. Today, RSS *shakhas* operate across urban and rural India, drawing lakhs of regular participants from diverse age groups.

Over the decades, the RSS has nurtured a network of affiliated institutions engaged in education, health, and social service. The Vidya Bharati schools, Seva Bharati initiatives, and various youth, women, and farmer associations exemplify its civic outreach. RSS volunteers have played significant roles in disaster relief, literacy drives, healthcare camps, women's empowerment programmes, and rural development efforts, reflecting widespread *janbhagidari* (mass participation) and reinforcing community cohesion.

The centenary of the RSS in 2025 marks a milestone in India's civic history, underscoring the longevity of a volunteer-driven institution that has contributed to social service and nation-building. Its evolution from a local cultural initiative to a nationwide network highlights the role of voluntary organisations in shaping community life and supporting India's socio-political fabric over a century.

The Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp marking 100 years of Rashtriya Swayamsevak Sangh. This stamp celebrates the enduring legacy of the RSS in fostering community initiatives, promoting cultural awareness, and supporting nation-building across India. It serves as a tribute to the volunteers whose dedication has shaped social service, education, and civic engagement over the past century.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/: Cancellation Cachet	:	Sh. Sankha Samanta
Text	:	Referenced from content provided by the proponent

भारतीय डाक
India Post
डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष
100 YEARS OF RASHTRIYA SWAYAMSEVAK SANGH

विवरणिका BROCHURE

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) की स्थापना 27 सितंबर 1925 को नागपुर, महाराष्ट्र में डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा की गई। यह कालखंड औपनिवेशिक भारत में स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक सुधार आंदोलनों से प्रेरित गहन सामाजिक–राजनीतिक उथल–पुथल का कालखंड था। आरएसएस की संकल्पना अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक जागरूकता पर बल देने वाले स्वयंसेवक–आधारित संगठन के रूप में की गई थी। आरएसएस, स्वतंत्रता–पूर्व प्रबोधन के युग में जन सहभागिता और राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देने हेतु प्रयासरत रहा। इस दौरान संघ के स्वयंसेवकों ने अपने कार्यों और अपनी विचारधारा के माध्यम से राष्ट्रवाद, आत्मनिर्भरता और जनभागीदारी को प्रोत्साहित किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संगठनात्मक ढाँचा शाखाओं अर्थात स्थानीय सभा इकाइयों पर केंद्रित है। इन इकाइयों में स्वयंसेवी अथवा स्वयंसेवक शारीरिक प्रशिक्षण, सामुदायिक संवाद, प्रार्थना और नैतिक शिक्षा संबंधी कार्यक्रमों में प्रतिभाग करते हैं। आरएसएस की इस विकेन्द्रीकृत संरचना ने उसे नागपुर से लेकर समस्त महाराष्ट्र और तत्पश्चात सम्पूर्ण भारतवर्ष के अन्य क्षेत्रों में तेजी से विस्तार करने में मदद की। सन् 1940 में श्री हेडगेवार के देहावसान के उपरांत, आरएसएस का नेतृत्व श्री माधव सदाशिव गोलवलकर के हाथों में आया, जिन्होंने संगठन के संवर्ग–आधारित मॉडल को सुदृढ़ करने पर बल दिया। तत्पश्चात, बालासाहेब देवरस ने देशभर में आरएसएस के व्यापक विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान में, आरएसएस की शाखाएँ समस्त शहरी और ग्रामीण भारत में संचालित होती हैं, और इनमें विभिन्न आयु वर्गों के लाखों प्रतिभागी नियमित रूप से भाग लेते हैं।

दशकों से, आरएसएस ने शिक्षा, स्वास्थ्य और समाज सेवा से जुड़े तमाम संबद्ध संस्थानों का एक नेटवर्क विकसित किया है। विद्या भारती स्कूल, सेवा भारती पहल और युवाओं, महिलाओं तथा किसानों से जुड़े विभिन्न अनुषंगी संगठन आरएसएस की नागरिकों तक व्यापक पहुँच के प्रमुख उदाहरण हैं। आरएसएस के स्वयंसेवकों ने आपदा मोचन, साक्षरता अभियानों, स्वास्थ्य शिविरों, महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आरएसएस के ये प्रयास, व्यापक जन–भागीदारी और सामाजिक एकता को सुदृढ़ करने संबंधी उसके दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करते हैं।

वर्ष 2025, आरएसएस का शताब्दी वर्ष है। यह समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले इस स्वयंसेवी संगठन के दीर्घायुष्य को रेखांकित करता है और भारत के नागरिक इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। आरएसएस एक स्थानीय सांस्कृतिक पहल के रूप में शुरू होकर आज एक राष्ट्रव्यापी नेटवर्क बन चुका है। इसकी यह विकास यात्रा, सामुदायिक जीवन को आकार देने में स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका और एक सदी से भी अधिक समय से भारत के सामाजिक–राजनीतिक ताने–बाने को मजबूत करने में इन संगठनों के योगदान को रेखांकित करता है।

डाक–विभाग, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है। यह डाक टिकट भारत भर में सामुदायिक पहलों में सहयोग करने, सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ाने और राष्ट्र निर्माण में योगदान की आरएसएस की चिरस्थायी विरासत को रेखांकित करता है। यह उन स्वयंसेवकों के प्रति सम्मान का भी प्रतीक है जिनके अटूट समर्पण ने गत शताब्दी में समाज सेवा, शिक्षा और जन सहभागिता को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आभार:

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे : श्री शंख सामंत

पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500p
मुद्रितडाक–टिकटें	:	202800
Stamps Printed	:	202800
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00